Hindi-हिन्दी
عيد مبارك
تقبل الله منا ومنكم صالح الأعمال
ईद उल फितर १४४३ हिजरी के अवसर पर एक संदेश
उपमहाद्वीप में अल कायदा द्वारा
दुनिया भर के सभी विश्वासियों और विशेष रूप से
उपमहाद्वीप के मुसलमानों के लिए
Islamic Translation Center
ادارہ السّحاب، برِّصغیر
As-Sahab Media (Subcontinent)

ईद उल फितर १४४३ हिजरी के अवसर पर एक संदेश

उपमहाद्वीप में अल कायदा द्वारा

दुनिया भर के सभी विश्वासियों और विशेष रूप से उपमहाद्वीप के मुसलमानों के लिए

بسم الله الرحمن الرحيم

الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله والله أكبر الله أكبر ولله الحمد, الله أكبر كبيرا والحمد لله كثيرا وسبحان الله بكرة وأصيلا, وبعد

हम सभी विश्वासियों, विशेष रूप से उपमहाद्वीप के मुसलमानों को ईद के शुभ और खुशी के अवसर पर बधाई देते हैं, और हम अपने इलाह से प्रार्थना करते हैं कि विश्वासियों के उपवास और सभी पुण्य कार्यों को स्वीकार (कुबूल) करें, उन्हें जन्नत प्रदान करें, उन्हें बचाएं नर्क की आग की पीड़ा से और उन्हें अपनी स्वीकृति और सद्भावना के साथ आशीर्वाद दें।

वास्तव में, ईद का अवसर सभी मुसलमानों को याद दिलाता है कि उनकी उत्साह और खुशी अल्लाह (महान) की ओर मुड़ने और उसके सामने आत्मसमर्पण करने में है। ईद का यह दिन सभी मुसलमानों के लिए एक संदेश है कि सम्मान केवल अल्लाह के रसूल द्वारा लाए गए दीन का पालन करने और इसे अपने गौरव और सम्मान का स्रोत बनाने में है। ईद का दिन सबक देता है कि जो सिर एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान के सामने झुकता है, वह जीवन के किसी भी मार्ग या क्षेत्र में किसी अन्य के सामने नहीं झुक सकता।

ईद इन संदेशों को हमारे पास ऐसे समय में लाता है, जब एक राष्ट्र (उम्मत) के रूप में पूरी दुनिया में मुसलमान, दुनिया के गैर-आस्तिकों (कुफ्फार) के उत्पीड़न और हिंसा के शिकार, पिछड़े, असहाय हैं। उपमहाद्वीप में रहने वाले मुसलमानों की स्थिति भी

दयनीय है। 'कश्मीर' और 'कश्मीर के मुसलमान' दशकों से भारतीय हिंसा का खामियाजा भुगत रहे हैं। भारत के अंदर रहने वाले मुस्लिम अल्पसंख्यक, विशाल हिंदू बहुमत के बंधक अब 'नरसंहार' के कगार पर हैं। अराकान (म्यांमार) में रोहिंग्या मुसलमानों को अपने घरों और संपत्तियों को छोड़ भागने के लिए मजबूर किया गया है। इस्लाम को 'जीवन जीने के तरीके' के रूप में प्यार करना और अभ्यास करना पाकिस्तान में एक अपराध बन गया है। बांग्लादेश, जिसके अपराधियों को सबसे खराब अपराधी घोषित किया गया है। अल्लाह के पैगंबर صلى الله عليه و سلم ने कहा:"

إذا تبايعتم بالعينة وأخذتم أذناب البقر ورضيتم بالزرع وتركتم الجهاد سلط الله عليكم ذلا لا ينزعه منكم حتى ترجعوا إلى دينكم" (رواه أبو داود)

"(अब तक) "जब आप "عينه" (ब्याज आधारित लेन-देन) में प्रवेश करते हैं, बैलों की पूंछ पकड़े, कृषि से प्रसन्न हों, और जिहाद करना छोड़ दें (अल्लाह के मार्ग पर) अल्लाह आप पर अपमान को प्रबल करेगा और इसे तब तक नहीं हटाएगा जब तक कि आप अपने मूल धर्म (दीन) में वापस नहीं आ जाते।"

मुसलमानों के लिए यह अनिवार्य है कि वे अल्लाह के सभी आदेशों को उसी तरह प्रस्तुत करें जैसे वे रमजान के इस धन्य महीने में अपने रब की ओर मुड़े थे। उन्हें पूरी तरह से अपने दीन का अभ्यास करने के लिए वापस लौटना होगा, कुकर्मियों के साथ समझौता और गाली-गलोज का रास्ता छोड़ना होगा, सत्य और न्याय को बनाए रखने के लिए तेजी से खड़े होना होगा और बुराई

की ताकतों को वश में करने के लिए जिहाद और किताल का रास्ता अपनाना होगा। इसके लिए मुसलमानों की अधीनता और गिरावट को समाप्त करने और उन्हें सम्मान और गौरव के युग में वापस लाने, पूरी दुनिया में इस्लाम के झंडे को ऊंचा करने और सभी मानवता के लिए शांति और अमन लाने का यही एकमात्र तरीका है।

वह मार्ग जो उपमहाद्वीप के मुसलमानों के उद्धार और सफलता की ओर ले जाता है, उन्हें इस्लाम का पूरी तरह से पालन करने और अपने दीन के लिए मजबूत और जल्दी खड़े होने की भी आवश्यकता है। उपमहाद्वीप के मुसलमानों के लिए कश्मीर में जिहाद और किताल के आंदोलन को अपने ताकतों से, अपने धन से, अपनी स्वीकृति से और हर संभव तरीके से समर्थन देना समय की मांग है। क्योंकि यह वही जिहाद और क़िताल है जो भारतीय हिंसा के गढ़ को तोड़ देगा और हिंद की लड़ाई (गज़वा ए हिंद) का प्रवेश द्वार साबित होगा। भारत में रहने वाले मुसलमानों को अब खुद को धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के कपटपूर्ण बंधनों से मुक्त करना चाहिए, उन्हें अपने धर्म के लिए सम्मान दिखाना चाहिए, और हिंदुत्व आतंकवादियों की आक्रामकता का सामना करने के लिए इस तरह से इकट्ठा होना चाहिए कि हिंदुत्व की आक्रामकता को रोका जा सके। पाकिस्तान और बांग्लादेश के मुसलमानों को शरीयत को लागू करने के लिए एकजुट होना चाहिए, उन्हें समाज में इस उद्देश्य के लिए एक आंदोलन शुरू करना चाहिए और इसे जिहाद और दावात के माध्यम से एक

कार्यान्वयन बल और ताकत प्रदान करना चाहिए, एक ऐसी ताकत जो सामना कर सके सभी विरोधी ताकतों का। उनका सामना तब तक करेंगे जब तक कि शरीयत की स्थापना निश्चित नहीं हो जाती।

हम सभी विश्वासियों को बधाई देते हैं, वह समय दूर नहीं जब इस्लाम एक बार फिर उपमहाद्वीप पर हावी हो जाएगा, मुसलमानों को सम्मानित किया जाएगा, गजवा ए हिंद विजयी होगा, और कुफ्र (बुराई और अविश्वास) के नेताएं जंजीर और बेड़ियों से जकड़े होंगे। न केवल उपमहाद्वीप में, बल्कि पूरी दुनिया में इस्लाम की जीत होगी और मुसलमान मजबूत और सम्मानित होंगे। ये खुशखबरी हमें हमारे प्यारे सबसे सच्चे पैगंबर, जिनकी सच्चाई की पुष्टि की गई है, द्वारा लाई गई है। पैगंबर صلى الله عليه و سلم ने कहा:

لا يَبْقَى عَلَى الأَرْضِ بَيْتُ حَجَرٍ وَلاَ مَدَرٍ وَلاَ وَبَرٍ إِلاَّ أَدْخَلَهُ اللهُ كَلِمَةَ الإِسْلاَمِ بِعزِّ عَزِيزٍ أَوْ ذُلِّ ذَلِيلٍ ،
إما يعزهم فيجعلهم من أهلها ، وإما يذلهم فيدينون لها (رواه أحمد والحاكم)

"कोई भी मिट्टी के घर या पत्थर के घर धरती पर बाकी नहीं रहेगा, लेकिन अल्लाह उसमें इसलाम के कलिमे को प्रवेश करेगा। चाहे लोग इसे स्वेच्छा (अपनी मर्जी) से स्वीकार करें और आदरणीय और प्रतिष्ठित बन जाएं या वे अनिच्छा से इसे प्रस्तुत करें और अपने लिए अपमान और अपमान चुनें। अल्लाह उन लोगों को शामिल करेगा जिन्हें वह सम्मान देता है (समूह) इस्लाम

को। और उन लोगों को अपने अधीन कर लेगा जिनके लिए उसने इस्लाम के शासन के तहत अपमान और अपमान को चुना है।"

एकमात्र स्थिति यह है कि सम्मान और गरिमा के मार्ग का अनुसरण करना है, जिस मार्ग से हमें इस्लाम को पूरी तरह से अपनाने, अल्लाह की ओर मुड़ने और जिहादी फ़ी सबीलिल्लाह के दायित्व को पूरा करने की आवश्यकता है। हम उपमहाद्वीप के मुसलमानों के साथ खड़े हैं इस यात्रा में और हम उनके सम्मान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने से नहीं हिचकिचाएंगे। इस्लाम के दुश्मन हम पर आतंकवाद का आरोप लगाकर चाहे हमें बांटने की कितनी भी कोशिश कर लें, अल्लाह की मर्जी से, वे कभी कामयाब नहीं होंगे। आइए! आइए हम सभी इस ईद के दिन अल्लाह के सामने अपने गुनाहों के लिए पश्चाताप करने के लिए इकट्ठा हों, अल्लाह के सभी आदेशों को अमल में लाने का संकल्प लें, अल्लाह के वचन को बनाए रखने की जिम्मेदारी लें और उसके दीन के प्रभुत्व के लिए प्रयास करें, और उससे वादा करें कि हम मजबूती से खड़े रहेंगे अमेरिका, इज़राइल, भारत और अन्य सभी आक्रामक ताकतों और उनके तांडों के खिलाफ, जो इस्लाम के विरोध और खिलाफ में हैं।

اللهم أبرم لهذه الأمة أمر رشد يعز فيه أهل طاعتك ويذل فيه أهل معصيتك، ويؤمر فيه بالعروف . وينهي فيه عن المنكر. اللهم أعز الإسلام والمسلمين وانصر المجاهدين، آمين يا ربّ العالمين ورصلى الله تعلى على نبينا و حبيبنا محمد وعلى آله وصحبه و أمته أجمعين

وآخر دعوانا ان الحمد لله ربّ العامين